सं. भो.वि./एफ.डी./45-85/30832.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राथ है कि मैं. श्राईशर गुडर्थ लि॰, एन॰ग्राई॰टी॰, फरीवाबाद, के श्रीमक श्री सुरेश सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के पथ्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विदाद को न्यामनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब्न, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) हारा ,प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके हरी सरकारी श्रिधसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 करवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवाद श्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिये निर्दिण्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच था तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथका संबंधित मामला है :--

क्या श्री सुरेश सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? सदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि/एफ.डी-11/118-85/30839.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राथ है कि मैं. जितेन्द्रा कास्टिंग एण्ड इन्जि॰ वर्कस, 205/24, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री साहिब राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है:

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्ठितियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई भिक्तियों का प्रयोग करते हुने, हिरिषाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रष्टिसूचना सं. 11495-जी:-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रष्टिसूचना की धारा 7 के श्रुधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवाद श्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायालणय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद श्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है :-\_

नया श्री साहिब राम की सेवाश्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

## दिनांक 24 जुलाई, 1985

सं. श्रो.वि./एफ़.डी./116-85/31120--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं जितेन्द्रा कास्टिंग एण्ड इन्जि. वर्कस, 205/24, फ़रीदावाद, के श्रीमक श्री भमवल तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है, और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की म्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई - शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415-3-अम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना सं 11495-जी-अम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या निवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री भमबल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो.वि./एफ.डी.-1/47-85/31127.--चूंकि हरियाणा के राज्यवाल की राये है कि (1) परिवहन आयुक्त, हरियाणा, चन्डागढ़ (2) हरियाणा राज्य परिवहन, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री नन्द लाल हैल्पर तथा उसके अवन्धकों के मध्य इसमें इसके ब्रुवि लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हैरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, भी खोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा की गई गिवितमों का प्रयोग करते हुए, हिरयाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनां जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनां के 7 फ़रवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फ़रीदाबाद, को विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिन एं में लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त श्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या सो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा संबंधित मामला

न्या श्री नन्दलाल हैल्पर की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का • ं हकदार है ?